डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 8-08-2020

विषय- वैदिक साहित्य

ऋग्वेद के देवता

ऋग्वेद में स्तुतियों की प्रधानता है। यहां अग्नि और इंद्र जैसे देवताओं से लेकर उलुखल और मुसल जैसे उपयोगी वस्तुओं की भी स्तुति की गई है। इस कारण ऋग्वेद में देवताओं की संख्या में वृद्धि हो जाना स्वाभाविक ही है। इसमें देवता से लेकर प्रकृति तथा सभी प्रकार के उपयोगी वस्तुओं की स्तुति की गई है।

ऋग्वेद में आए इतने अधिक देवताओं का विवेचन स्वयं में एक समस्या है जिसका अनुभव बहुत पहले ही निरुक्तकारों को भी हो गया था। परिणाम स्वरूप 'यास्क' ने इस पर विचार किया और कहा कि देवता तीन ही है-

तिस्र :एव देवता: इति नैरुक्ता:। अग्नि: पृथ्वी स्थान: वायुर्वा इंद्रो वा अंतरिक्षस्थान:, सूर्यो द्युस्थान: । तासां महाभाग्य त् एकैकस्या: अपि बहूनि नामधेयानि भवन्ति।' (निरुक्त 7/2/5)

यास्क के अनुसार प्रथम देवता अग्नि है जो पृथ्वी का देवता है। द्वितीय देवता इन्द्र या वायु है जो अंतरिक्ष का देवता है और तृतीय देवता सूर्य है, जो द्युलोक का देवता है । इसके साथ ही, यास्क ने यह निर्णय किया कि ऋग्वेद के सभी देवता इन्हीं तीनों देवताओं के विभिन्न नाम हैं, या इन्हीं तीनों में अन्तर्भूत है क्योंकि ये तीनों देवता महाप्रभावशाली होने से अनेक नामों वाले हो जाते हैं ।

सूक्तों की संख्या के आधार पर और ऋग्वेद में हुई देवताओं की स्तुतियों के आधार पर यदि निर्णय किया जाय तो ऋग्वेद में इंद्र की स्तुति में 250 सूक्त है, अग्नि की स्तुति में 200 सूक्त है और सोम की स्तुति में 120 सूक्त है । इस प्रकार स्तुति के आधार पर इंद्र, अग्नि और सोम ही ऋग्वेद के प्रमुख देवता प्रतीत होते हैं।

कार्यों के महत्व की दृष्टि से

देवताओं द्वारा किए गए कार्यों की दृष्टि से यदि देखा जाए तो ऋग्वेद के देवताओं में इंद्र और अग्नि के पश्चात् वरुण का कार्य ही महत्वपूर्ण है। इस दृष्टि से ऋग्वेद के देवताओं में इन्द्र, अग्नि और वरुण महत्वशाली ज्ञात होते हैं।

आकृति के आधार पर

आकृति की दृष्टि से विचार करने पर ऋग्वैदिक देवताओं में से कुछ देवता पुरुषों की आकृति वाले हैं, कुछ देवता पुरुषों से भिन्न आकृति वाले हैं और कुछ दोनों ही प्रकार के हैं । जैसा कि निरुक्त में कहां गया है- "अथ आकार चिन्तनं देवतानाम्। पुरुष विधा: स्यु:-इत्येकम्, अपुरुषविधा: स्यु: - इत्यपरम्। अपि वा उभयविधा: स्यु:"। (निरुक्त 7/2)

यहां ऋग्वेद के कुछ देवताओं का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है और कुछ देवताओं का केवल नाम परिगणन मात्र ही किया जा रहा है-

1. **इन्द्र -** यह अंतरिक्ष स्थानीय देवता है । महत्व क्रम की दृष्टि से ऋग्वेद के देवताओं में इंद्र का स्थान सर्वप्रथम है। इंद्र की स्तुति यहाँ 250 सूक्तो में की गई है । ऋग्वेद में इंद्र के रूप, स्वभाव और कार्यों का वर्णन विस्तार से हुआ है। इनका शरीर बहुत ही सुदृढ़ है । ये वज्र धारण करते हैं । सोमपान इसे अत्यधिक प्रिय है। ऋग्वेद में इंद्र को सर्वत्र ही वीर योद्धा एवं विजेता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अपने स्तुति कर्ताओं को भी यह विजय दिलाने वाला है। वृत्त और अहि को मारने वाला है। इसे 'वृषभ' भी कहा गया है। इंद्र वर्षा भी कराता है। ऋग्वेद में इंद्र की स्तुति में प्राय: वीर रस पूर्ण पदावलियों का ही प्रयोग मिलता है।
2. **अग्नि -** अग्नि स्थानीय देवता है । ऋग्वेद में अग्नि की स्तुति 200 सूक्तों में हुई है । महत्व की दृष्टि से ऋग्वेद में इंद्र के पश्चात् अग्नि का ही स्थान है । ऋग्वेद के प्रत्येक मंडल के प्रारंभ में अग्नि की स्तुति मिलती है । अग्नि के भौतिक और जैविक दोनों ही रूपों की स्तुति यहां मिलती है। अग्नि देवता का प्रमुख कार्य देवताओं को हवि पहुंचाना और उन्हें यज्ञ में बुलाकर लाना है। इसके अतिरिक्त दृष्टि (देखने) से संबंधित सारे कार्य भी अग्नि ही करता है।
3. **वरुण -** यह स्थानीय देवता है । ऋग्वेद के देवताओं में यह सर्वाधिक शक्तिशाली है । ऋग्वेद के प्रमुख देवताओं में वरुण की गणना होती है । वरुण अनुशासन का देवता है। वरुण के नियम बड़े कठोर हैं जिन्हें 'ऋत' कहा गया है। यह सभी को नियमों का पालन करवाता है । अतः इसे 'धृतव्रत' कहा जाता है। नियमों का पालन न करने वालों को यह कठोर दण्ड देता है । वरुण पृथ्वी, अंतरिक्ष और समुद्र, सभी स्थानों पर रहने वाले प्राणियों पर दृष्टि रखता है। पाप करने वाला इसकी दृष्टि से बच नहीं सकता । सबको कर्मों का फल देने वाला यह देवता ऋग्वेद में विश्व नियंता परमेश्वर के रूप में वर्णित है।
4. **सोम-** सूक्तों की संख्या की दृष्टि से इंद्र और अग्नि के पश्चात ऋग्वेद में सर्वाधिक सूक्त सोम संबंधी ही है । संपूर्ण नवम् मंडल में सोम की स्तुति हुई है । वनस्पति और चंद्रमा दोनों ही रूपों में इसका वर्णन मिलता है । वनस्पति के रूप में इसे कूट पीसकर, छानकर और दूध आदि मिलाकर एक स्वादिष्ट पेय के रूप में तैयार किया जाता था। देवताओं में इंद्र को सोमपान का प्रेमी कहा गया है । इसके पीने से देवताओं को अमरत्व की प्राप्ति होती थी।

अन्य देवता

ऊपर वर्णित देवताओं के अतिरेक ऋग्वेद में सूर्य, उषा, मित्र, विष्णु, रूद्र, मरुत, पर्जन्य आदि अन्य अनेक देवताओं का भी वर्णन मिलता है।

- **स्त्री देवता-** पुरुष देवताओं के ही समान ऋग्वेद में स्त्री देवताओं के भी महत्व है। पुरुष देवताओं के समान ऋग्वेद में स्त्री देवताओं की भी स्तुति मिलती है । स्त्री देवताओं में उषा का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है । ऋग्वेद में उषा की कल्पना बहुत ही कवित्व पूर्ण है । सोने के रथ पर चढ़कर निकलने वाली उषा के वर्णन में वैदिक ऋषि ने अत्यंत सुंदर्याभि व्यंजक शब्दावली का प्रयोग किया है। ऋग्वेद में उषा को 'पुराणी युवति' की संज्ञा दी गई है।
- **भावात्मक देवता-** ऋग्वेद में 'श्रद्धा' और 'मन्यु' और काम की भी स्तुति मिलती है। एक सूक्त में 'श्रद्धा' का और दो सूक्तों में 'मन्यु' का वर्णन है । यह दोनों ही देवता मानव भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। बृहस्पति भी भावात्मक देवता है। इस कोटी के अन्य देवताओं में प्रजापति, त्वष्टा, अदिति, दिति की भी गणना होती है।
- **युगल देवता-** ऋग्वेद में कुछ देवताओं की स्तुति युगल देवता के रूप में भी मिलती है । ऐसे देवताओं में 'मित्रावरुण' सबसे प्रमुख है। इसके अतिरिक्त अग्नि-मारुत, द्यावा-पृथ्वी, इन्द्राग्नि, 'अग्निसोमो' और इन्द्राविष्णु भी युगल देवता है।
- **निम्न कोटि के देवता-** निम्न कोटि के देवता या साधारण कोटि के देवता में अप्सराएं और गन्धर्वो की गणना होती है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ऋग्वेद में ऊपर वर्णित देवता ही नहीं अपितु मनुष्य जीवन के लिए उपयोगी वस्तुओं की भी स्तुतियाँ मिलती है। इस रूप में हम कह सकते हैं कि ऋग्वेद में वर्णित प्रत्येक वस्तु ही देवता है।